युद्ध

इंसान एक बीज की तरह है। उसे एक वृक्ष की तरह विकसित होना चाहिए। यदि बीज उसी रूप में ही मर जाता, तो इसका मतलब है कि यह विकास के बिना मर गया है। इसी तरह अगर बीज विकसित नहीं होगा तो इसका मतलब, यह मृत्यु के करीब है। इसलिए आपको विकसित होना चाहिए या मरना चाहिए। कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

बीज दो तरह से मर सकता है। बीज विकास के बिना मर सकता है, या विकसित होने के लिए मर सकता है, अर्थात बीज के रूप में मर कर पौधे के रूप में जन्म लेना है। विकसित होने के लिए मरना, ज्यादा समय तक जीने के लिए द्वार बन जाता है। विकसित होने के लिए मरना अर्थात वर्तमान स्थिति से उच्च स्थिति में जन्म लेने के लिए मरना है, आप एक आयाम में गायब होकर एक और उच्च आयाम में साक्षात्कार होना।

इंसान पदार्थ के रूप में मरकर, आत्मा में पुनर्जन्म लेने की प्रक्रिया हर दिन होना चाहिए, या "आंतरिक यात्रा" अध्याय के अनुसार अधिपति का जन्म लेना है। अर्थात हमें स्वच्छ होना चाहिए या हमें ज्ञात में मरकर अज्ञात में पुनर्जन्म लेना है। यह ज्ञात का अर्थ पदार्थ है और अज्ञात का अर्थ रहस्यमय आत्मा है। जब अज्ञात ज्ञात होता है, तो वह भी पदार्थ हो जाता है। यह पदार्थ का मतलब रूप अर्थात अहंकार। तो इस माया की दुनिया में अहं-कर्ता की तरह या करने-वाला की तरह या जीवात्मा की तरह कई भूमिकाओं को निभाने वाले आप, पात्रधार के रूप में मरकर, हर रोज निराकार रूप में या अधिपति की रूप में या देखने-वाला की रूप में या सूत्रधार की रूप में पुनर्जन्म लेना चाहिए।

इस तरह ज्ञात में मरना, अज्ञात में पुनर्जन्म लेना निरंतर होना चाहिए, तभी विकास संभव होगा। इस बात को याद रखिए कि, यहां शरीर नहीं, बल्कि उस में निवास रहने वाला अहं-कर्ता मतलब आपको ही मरना है।

इस बात का ध्यान रखें कि, इस तरह माया की दुनिया में होने वाले त्रिगुण, इंसान, और सभी अन्य चीजों को, एक साधन की तरह एक वाहन की तरह उपयोग करके, अंदर रहने वाला शाश्वत घर का पता लगाकर, बाद में सांसारिक चीजों को स्वच्छ करके, शाश्वत घर में प्रवेश करना ही हमारा हर रोज का लक्ष्य होना चाहिए।

इसलिए अब यह सवाल उठता है कि, कैसा मरना है और कैसा पुनर्जन्म लेना है? नित्य आप बहुत सारे संकल्प लेते हैं। उदाहरण के लिए आप कुछ अच्छा काम करने का संकल्प रख कर ध्यान करेंगे, तो 100% शक्ति सिर्फ अच्छे को ही नहीं मिलता, बल्कि बुरे और तटस्थ को भी मिलेगा। इसलिए कोई भी संकल्प करने से, तुरंत हमें इस बात का डर शुरू होता है कि, यह संकल्प पूरा होगा या नहीं।

धर्म अध्याय में कहा गया है कि, आप में गुणों का मिश्रण जैसा होगा, उदाहरण 60% अच्छा, 30% बुरा, 10% तटस्थ रहे तो, उसी तरह से ही विरुद्ध गुण, शक्ति को आकर्षित करते हैं। यह मिश्रण सभी में एक जैसा नहीं होगा। हम यह स्पष्ट से नहीं कह सकते हैं कि,

किस व्यक्ति में गुणों का मिश्रण कितना है। साथ ही यह गुणों का मिश्रण परिस्थितियों के अनुसार बदलते है। तब हमें साधना करके इस मिश्रण को समान तुलना में लाने के लिए प्रयास करना होगा। जब यह मिश्रण आप में समान तुलना में पहुंचेगा, तब आप परमानंद को अनुभव करेंगे।

इस बात का ध्यान रखिए कि, आप जो भी संकल्प लेते ही, उसके संबंधित तीन विरुद्ध भूमिकाएं अनिवार्य से सृष्टि होगा। अर्थात यदि आप अच्छे गुरु बनने की संकल्प रखते है, तो अनजाने में आप बुरे और तटस्थ गुरु भी बनने की संकल्प ले रहे है, और आप अच्छे-बुरे-तटस्थ शिष्य भूमिकाओं का संकल्प भी ले रहे है। इसलिए गुरु शिष्य में, और शिष्य गुरु में तीन प्रकार के गुण को महसूस करते हैं। इसलिए आपको समझना है कि, सब कुछ आप के संकल्प के अनुसार हो रहा है। क्योंकि इन को मैंने ही सृष्टि किया, इतने दिन मैंने ही इसका पोषण किया, इसलिए अब इसे नष्ट करने का जिम्मेदारी भी मेरी है। ऐसा समझकर उस संकल्प के संबंधित तीनों को, अर्थात गुरु और शिष्य के भूमिकाओं को नष्ट करना है मतलब स्वच्छ करना है।

विरुद्ध पात्रों के बीच युद्ध के माध्यम से या उनके बीच मित्रता पैदा करने से, हम उन्हें नष्ट कर सकते हैं। इसलिए आपको ऐसा करना है - संकल्प के संबंधित अनुभवों को दिव्य की तरह अनुभव करते हुए, उस अनुभवों के संबंधित लक्षणों के सहायता से आपको सुनिश्चित करना होगा की, आपको अधिपति बनने के लिए, मर के पुनर्जन्म लेना है। उसके बाद विरुद्ध पात्रों के बीच मित्रता पैदा करके एकीकृत करना है। इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए “आंतरिक यात्रा” अध्याय पढ़िए।

लेकिन कुछ पात्र मित्रता के लिए सहयोग नहीं देंगे। क्योंकि वे अच्छे-बुरे-तटस्थ के बीच दुश्मनी था, तब संकल्पित करके उनका सृष्टि किया गया था। उनके प्रोग्रामिंग इस तरह किया गया था इसलिए वे सिर्फ लड़ना ही जानता है। अर्थात जब आप न्यूएनर्जी कांसेप्ट का अनुसरण नहीं करते थे, तब आप विरुद्ध को दुश्मन की तरह मानने की स्थिति में होकर, उन पात्रों के साथ उसी बंधन को जारी रखते थे, इसलिए वे मिलने के लिए पसंद नहीं करते। वे ध्यान में भी आपको विचलित करते हैं।

ठीक है मैं आपको आत्मसमर्पण करता हूं, मुझे स्वच्छ होने के लिए सहयोग करो, इस तरह अनुरोध करने के बावजूद भी, वे युद्ध को छोड़कर किसी और के लिए सहमत नहीं देंगे। उनका प्रभाव आप पर पढ़ने से आप गड़बड़ में पढ़ेंगे, मतलब आप में भी दोष रहने की वजह से इन पात्रों में फस गए, अर्थात आप स्वच्छ नहीं है।

इसलिए पिघलने का साधना करके आप स्वच्छ होने के बाद, जो पात्र आपने निभाए थे और शेष पात्रों के साथ अंदर युद्ध करके, विरुद्ध पात्रों का सर्वनाश कीजिए। ऐसा करने से, जो शक्ति ध्वंस हो जाता है, वे स्वच्छ शक्ति में परिवर्तन होकर, आपके भविष्य के नए संकल्प के लिए उपयोग होंगे।

लेकिन आपको यह संदेह हो सकता है कि, शक्ति को ना सृष्टि कर सकते है, ना ही नष्ट कर सकते है। इसके लिए मेरा समाधान है कि - हम शक्ति को पूरी तरह से नष्ट नहीं कर रहे हैं, उसके साथ प्यार से व्यवहार ना करते हुए, कठोरता से ध्वंस करके स्वच्छ शक्ति में परिवर्तित कर रहे हैं। एक और संदेह आपको हो सकता है कि, आपका कांसेप्ट न्यूएनर्जी है ना, तो यहां हम नई शक्ति को कैसे पैदा कर सकते हैं? इस का समाधान - भगवान के पास स्वच्छ शक्ति अनंत मात्रा में होता है, इसे मैं न्यूएनर्जी कहता हूं, आप स्वच्छ होने से ही यह शक्ति आपको उपलब्ध होता है।

साधना

उदाहरण के लिए: पति, पत्नी की बात ना सुनते हुए भाई कि बात सुन रहा है। तो पत्नी को ऐसा साधना करनी चाहिए - आप मेरे बात ना सुनते हुए आपके भाई की बात सुन रहे है, समझ गया कि मेरे बातों से आपको किक नहीं मिल रहा है, इसलिए आप उनके बात सुन रहे हैं। इसलिए मैं पत्नी के पात्र से बाहर आकर तटस्थ स्थिति में रहकर आप को बदलने की कोशिश ना करते हुए, आप जैसे हैं वैसे ही आपको स्वीकार करूंगा । आप भी पत्नी के पात्र को स्वीकार कीजिए। अंदर इस तरह मानकर, उन पात्रों के बीच दोस्ती पैदा करने के लिए कोशिश कीजिए। या उनके सहयोग से स्वच्छ होने के लिए प्रयास कीजिए।

यदि पात्र सहयोग नहीं करते - तो आप अकेले बैठकर अंदर, पत्नी की पात्र को समर्थन करते हुए पति और तटस्थ की पात्रों के साथ, इसी तरह पति की पात्र को समर्थन करते हुए पत्नी और तटस्थ की पात्रों के साथ और तटस्थ को समर्थन करते हुए पति और पत्नी की पात्रों के साथ युद्ध कीजिए। इस तरह एक पक्ष में रहकर दूसरे पक्ष को नष्ट करते हुए, अंत में स्वच्छ जीवात्मा बनके, अच्छे-बुरे-तटस्थ विरुद्ध पात्रों को एक साथ ही नष्ट कीजिए। क्योंकि वे स्वच्छ शक्ति से एक साथ जन्म लेने की वजह से, वे एक साथ ही बड़े होते हैं, इसके बाद वे एक साथ ही नष्ट होकर फिर से स्वच्छ शक्ति में विलीन हो जाते हैं।

अर्थात केवल एक पात्र रहना असंभव है, हमेशा तीन विरुद्ध पात्र एक साथ ही रहते हैं। हमेशा ध्यान से या नींद से शक्ति पैदा होकर, तीनों को शक्ति मिलती है। इसलिए यदि एक विरुद्ध पात्र कमजोर होने के बाद भी, शक्ति को पुनर प्राप्त करके युद्ध को जारी रखते है। इस बात का गारंटी नहीं है कि, हमेशा आपके पसंदीद पक्ष की ओर शक्ति अधिक होगा। इसलिए सफलता-विफलता दोनों होते है। आप एक पक्ष की ओर रहते हुए, दूसरी पक्ष से युद्ध करके, यदि आप हमेशा जीतने पर भी, आप कभी भी भगवान तक पहुंच नहीं सकते, आप माया प्रभाव में ही फस जाएंगे। तो इसका समाधान: तीन विरुद्ध गुणों को युद्ध द्वारा ध्वंस करना या तीनों को मिलाकर एकीकृत करना।

यह सृष्टि आपके अंदर ही हो रहा है, आपने सभी प्रकार के भूमिकाओं को आपके पिछले जन्म में ही निभाई हैं, आपने सभी प्रकार के अनुभवों को पा लिया है, उन सभी को स्वच्छ रूप में परिवर्तित करके मुक्ति पाने के लिए आपने यह जन्म लिया है। और ध्यान रखिए कि पिछले जन्म की पात्रों से ही आप अपने अंदर युद्ध कर रहे है। अगर आपको लगता है कि आप

युद्ध नहीं कर सकते, तो आत्मा स्थिति में पुनर्जन्म लेने के लिए पिघलजाओ अध्याय के अनुसार पिघलने की साधना कीजिए।

कुछ समय आत्मा में रहने के बाद, वापस शरीर में आ जाइए। तब नया मानव, शरीर में प्रवेश करेगा। क्योंकि आप मौत को भी जान चुके है। आप शरीर से परे रहने वाला आत्मा आयाम को भी जान लिए है। इसलिए हर अनुभव को प्राप्त करने के बाद भगवान के साम्राज्य में प्रवेश कीजिए, तभी आप इधर-उधर प्रयाण अर्थात दोनों आयाम में प्रयाण करने में निपुण होंगे। आपको विश्वास होगा की भगवान की साम्राज्य हमेशा उपलब्ध होता है। भगवान के पास सभी सांसारिक समस्याओं का हल रहता है, इसलिए आप परमात्मा से पूछ कर, उनके सुझाव के अनुसार आचरण करेंगे तो, अपने आप ही समस्याओं को हल करके आनंद पूर्वक जिएंगे।

इस तरह हर रोज युद्ध से या मित्रता से सब कुछ स्वच्छ करके ध्यान करके आंखें खोलने से पहले: विरुद्ध पात्रों के साथ स्नेहपूर्वक से रहना है; या हर परिस्थितियों में सभी के साथ प्रभावित ना होते हुए स्वच्छ रहना है; या सूत्रधारी की तरह सभी प्रकार के पात्रों को निभाना है; या आप जैसे महसूस करते है वैसा संकल्प करके, कुछ समय के बाद आंखें खोलिए। इस तरह आपके सृजनात्मकता का उपयोग करके, इसी शरीर में आप बार-बार नए तरह से मरते हुए और नए तरह से पुनर्जन्म लेते हुए, पिछले जन्मों की सारे अनुभवों को स्वच्छ अनुभवों में परिवर्तित करना है। तभी गत का प्रभाव वर्तमान पर नहीं होगा। तभी आप कर्म सिद्धांत के परे जाएंगे।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**